www.thearyasamaj.org

ओ३म्

वार्षिक शुल्क 50/- रु.
आजीवन 500/- रु.
इस अंक का मूल्य 5/- रुपये

# आर्य प्रेरणा

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(आर्यसमाज राजेन्द्र नगर का मासिक मुख-पत्र)

दूरभाषः 011-25760006 Website - www.aryasamajrajindernagar.org सम्पादक : डॉ. भारद्वाज पाण्डेय

वर्ष-6 अंक 9, मास सितम्बर 2013 विक्रमी संवत् 2070, दयानन्दाब्द 189 सृष्टि संवत् 1960853112

## मनुष्य अल्प है

गंगा प्रसाद उपाध्याय

काउण्ट टौल्स्टाय ने अपनी "धर्म क्या है" (What is Religion) नामक पुस्तक में लिखा है कि 'Every religion regard men as equally insignificant compared to Infinity' अर्थात् प्रत्येक धर्म में यह माना गया है कि अनन्त शक्ति की अपेक्षा मनुष्य तुच्छ है। बहुत से नास्तिकों को यह बात बुरी लगती है और है भी कुछ अंश में ठीक। आत्म - गौरव रखने वाला मनुष्य अपने को किसी से तुच्छ क्यों समझे? बहुत से लोगों का यह आक्षेप है कि धर्म ने मनुष्य को नपुंसक बना दिया है। धर्म की पहली शिक्षा यही है कि मनुष्य तुच्छ है और इसको ईश्वर की शक्ति पर विश्वास करना चाहिये। इस शिक्षा का प्रभाव यह होता है कि अपनी तुच्छता को सोचते सोचते मनुष्य तुच्छ ही हो जाता है और संसार में कोई महान् कार्य नहीं कर सकता। जो लोग सोचते हैं कि हम सब कुछ कर सकते हैं वह सब कुछ कर भी डालते हैं।

हम इस मत से सर्वांश में सहमत नहीं हैं। जहाँ मनुष्य अपनी वास्तविक शक्तियों को न समझ कर नीच श्रेणी को प्राप्त हो जाता है वहाँ बहुत से मनुष्य अपनी शक्ति को कई गुना समझ कर हानि उठा बैठते हैं। जो मनुष्य चार रुपयों का स्वामी होकर अपने को लखपती समझता है वह अवश्य हानि उठावेगा। इसलिये बिना झूठे आत्मगौरव या झूठी तुच्छता का सोच किये हुये हमको मनुष्य की वास्तविक शक्तियों का पता लगाना चाहिये। शक्ति से कम काम करने से शक्ति व्यर्थ जाती है और शक्ति से अधिक कार्य उठा लेने से विफलता होती है, अच्छा यह है कि मनुष्य को अपनी यथार्थ शक्ति का ज्ञान हो जाये।

संसार के क्रम पर दृष्टिपात करने से दो वस्तुयें मिलती हैं। एक चेतन और दूसरी जड़। चेतन से जड़ निर्बल है, चींटी बड़े-बड़े मिट्टी के तूदों को काट डालती है। छोटे-छोटे कीड़े पहाड़ों को तोड़ डालते हैं। छोटे-छोटे पक्षी बड़े से बड़े वृक्षों को हिला देते हैं। इससे ज्ञात होता है कि जहाँ चेतनता है वहाँ बल है, वस्तुतः जड़ वस्तुओं में कुछ भी बल नहीं। उनमें भी बल चेतन से आता है, घोड़ा गाड़ी को खींचता है। इसलिये गाड़ी में बल नहीं किन्तु घोड़े में है। जड़ शरीर भी चेतन के सहारे ही चलता है, मरे हुये हाथी से जीवित चींटी बलवान् है।

चेतन शक्तियों में मनुष्य की शक्ति सब से अधिक बलवती है। इसने सभी अन्य चेतन शक्तियों को अपने वश में कर रक्खा है। एक छोटा बच्चा हाथी की पीठ पर बैठकर उनको चला सकता है। सिंह जैसे क्रूर जन्तु भी मनुष्य के कहने पर चलते हैं। छोटे-छोटे पशुओं का तो कुछ कहना ही नहीं। फिर जब शक्तियों पर भी मनुष्य का बहुत कुछ अधिकार है। जल मनुष्य का एक तुच्छ सेवक है। इससे वह न केवल अपनी प्यास ही बुझाता या नौका ही चलाता है किन्तु बिजली आदि निकाल कर अनेक काम ले सकता है। वायु मनुष्य के कहने पर चलता है, आग इसकी सेवा के लिये सर्वदा उद्यत रहती है। रेल, तार, वायुयान, जलयान ये सब मनुष्य की शक्ति के सूचक हैं। यद्यपि अन्य पशु पक्षी आदि जीवित शक्तियाँ भी सृष्टि में बहुत कुछ परिवर्त्तन करती हैं तथापि जो परिवर्तन मनुष्य द्वारा होता है वह विचित्र ही होता है सिंह जंगल का राजा है, परन्तु वह जंगल को उसी प्रकार छोड़कर मरता है जैसा उसने उसे जन्म के समय पाया था। इसके विपरीत मनुष्य ने सृष्टि के रूप को ही बदल दिया है, समुद्र पाट दिये, पहाड काट डाले, नदियों पर पुल बाँध दिये और उनके बहाव को बदल दिया, जंगल काट कर बड़े-बड़े नगर बसा दिये। थल के स्थान पर जल कर दिया, और जलाशयों को थल के रूप में परिवर्तित कर दिया। सारांश यह है कि मनुष्य की शक्ति का व्यापार संसार के प्रत्येक कोने में दृष्टिगोचर होता है। इसके समान संसार की कोई भी वस्तु बलवान नहीं। यह सब से अधिक बलवान

'आर्य-प्रेरणा' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

www.thearyasamaj.org



है, अपने इस बल की ओर दृष्टिपात करने से मनुष्य के हृदय में बड़ा भारी अभिमान उत्पन्न होता है। वह समझता है कि मेरे बराबर संसार में कोई नहीं, मैं सृष्टि का स्वामी हूँ, मैं सब कुछ कर सकता हूँ, मेरे अधिकार में सभी कुछ है।

परन्तु यदि विचारपूर्वक देखा जाय तो मनुष्य का ऐसा समझना उसकी बड़ी भारी भूल है। यद्यपि अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य में अधिक ज्ञान और इसलिये अधिक शक्ति है तथापि प्रत्येक बात में संसार की समस्त शक्तियों को देखते हुये उसकी शक्तियाँ अल्प हैं, उसका प्रभुत्व भी अपरिमित नहीं है, उसके ज्ञान की भी सीमा है। उसके पराक्रम भी एक मर्य्यादा से बाहर नहीं जा सकते।

सबसे प्रथम शारीरिक दशा पर विचार कीजिये। मनुष्य संसार के सब बलिष्ठ प्राणियों में नहीं है सैकड़ों जन्तु उससे अधिक बलवान है। उसकी इन्द्रियों की शक्ति भी अल्प ही है, न तो वह आँख से ही बहुत दूर तक देख सकता है न पैरों से ही हिरन के समान भाग सकता है। न हाथी के बराबर बोझ ही ढो सकता है। फिर उसकी आँख जो कुछ देखती है उससे भी अति अल्प ज्ञान होता है। पचासों प्रकार की आकृतियाँ तथा रंग उसे दिखाई नहीं पड़ते। सैकड़ों प्रकार के शब्दों को वह सुन नहीं सकता। जिस ज्ञान पर उसे इतना अभिमान है कि मैं बलिष्ठ से बलिष्ठ प्राणियों को दास बना सकता हूँ और दूर से दूर अपनी शक्ति का प्रभाव पहुँचा सकता हूँ, वह ज्ञान भी उसका इतना अल्प है कि उसे न सर्वज्ञ ही कह सकते हैं न बहुज्ञ। जो बात वह जानना चाहता है उससे अधिक बात जानने के लिये शेष रह जाती है। किसी निम्न स्थान में खड़ा हुआ मनुष्य चारों ओर देखकर छोटी सी क्षितिज को ही संसार की सीमा समझता है। परन्तु जितना जितना वह ऊँचे स्थान पर चढ़ता जाता है उतना-उतना ही वह समझता है कि क्षितिज बड़ा है, इसी प्रकार जितना जितना मनुष्य का ज्ञान बढ़ जाता है उतना-उतना वह यह अनुभव करता है कि मुझे अभी बहुत ज्ञान प्राप्त करना है। छोटी कक्षा का विद्यार्थी वर्णमाला को ही विद्या की इति श्री समझता है। उसका विचार यही होता है कि ज्योंही मैंने इस पुस्तक को समाप्त कर लिया मैं विद्वान् हो जाऊँगा परन्तु विद्यालय की उच्चतम कक्षा के विद्यार्थी को इसी परिणाम पर पहुँचना पड़ता है कि मैंने अभी कुछ नहीं सीखा। कहते हैं कि न्यूटन विद्वान् यही कहा करता था कि ज्ञान का अपार सागर मेरे सामने बह रहा है और मैं उसके तट पर केवल कंकड़ियाँ ही चुन रहा हूँ। भारतवर्ष के उपनिषद्कार सत्य ही कहते थे कि

***अविज्ञातं विजानतां विज्ञातमविजानताम्।***

बुद्धिमानों के लिये अज्ञात है और मूर्खों के लिये ज्ञात। यों तो संसार का प्रत्येक मूर्ख समझता है कि संसार की बुद्धि-राशि का आधा उसके पास है और आधा शेष संसार में बँटा हुआ है परन्तु उन विद्वानों से जो भिन्न-भिन्न शास्त्र के वेत्ता कहे जाते हैं पूछो तो सही कि वे क्या कहते हैं। क्या सभी यही नहीं कहते कि हमको अपने शास्त्रों के विषय में बहुत कम ज्ञान है। मनो-विज्ञान के धुरन्धर विद्वान् से पूछो तो वह कहेगा कि यद्यपि मैंने और मेरे पूर्वजों ने सहस्रों वर्ष के प्रयत्न से मानवी मन के विषय में बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त कर लिया है तथापि जितना हमको मालूम है उसकी अपेक्षा कई गुना मालूम नहीं है। बड़े-बड़े चिकित्सक पुराने अनुभव का लाभ उठा कर और अपनी समस्त आयु खर्च करके भी इसी परिणाम पर पहुँचते हैं कि हमको शरीर का बहुत कम ज्ञान है। कोई न कोई रोग ऐसा आ जाता है जो उनके समस्त ज्ञान को अज्ञान में परिवर्तित कर देता है और वह समझने लगता है कि जो कुछ अब तक जाना जाता था । शरीर के सहस्रों अंग ऐसे हैं जिनका शरीर-विज्ञान-वेत्ताओं को पता तक नहीं। इसी प्रकार अन्य शास्त्रज्ञों का हाल है। जब हम यह विचार करते हैं कि एक शास्त्र का वेत्ता दूसरे शास्त्र के विषय में या तो कुछ नहीं जानता या बहुत कम जानता है तो हमारे आश्चर्य की सीमा नहीं रहती। नवस्पतिशास्त्र-वेत्ता को मनुष्य की आँख का कुछ भी ज्ञान नहीं और एक गणितज्ञ वनस्पतिशास्त्र से सर्वथा अनभिज्ञ है। एक कवि जो मानवजाति की समस्त विभागों की आलोचना करने में दक्ष है एक बाँस की टोकरी नहीं बना सकता। और एक खगोल विद्या का पण्डित अपनी पैर उँगली की छोटी-सी फुंसी की औषधि नहीं जानता। फिर कैसे कह सकते हैं कि मनुष्य का ज्ञान बहुत है। हमने जो उदाहरण दिये हैं वे उन लोगों के हैं जो अपनी समस्त आयु को ज्ञान-वृद्धि के लिये अर्पण कर चुके हैं। कहते हैं कि हर्बर्ट स्पेंसर को अरस्तू से लेकर आधुनिक वैज्ञानिकों तक ने जितना ज्ञान प्राप्त किया वह सब मालूम था। परन्तु फिर भी हर्बर्ट स्पेंसर स्वयं कितना अल्पज्ञ था यह उसी की साक्षी से ज्ञात हो सकता है। जिस मानव जाति के उच्च से उच्च व्यक्ति जिनकी संख्या करोड़ों में एक से अधिक नहीं अपनी समस्त मास्तिष्किक शक्ति व्यय करके भी समस्त आयु भर में सृष्टि के ज्ञान का एक अल्पांश ही प्राप्त कर सकते हैं उसका क्या अधिकार है कि वह अपने ज्ञान पर अभिमान कर सके। फिर मनुष्य से अधिक बुद्धिमती तो अन्य जाति है भी नहीं। जब सर्व प्राणिवर्ग की शिरोमणि जाति के शिरोमणि व्यक्तियों का यह हाल है तो मनुष्य की अल्पता में कोई सन्देह ही नहीं रहता। फिर यदि देश और काल की सीमाओं पर विचार किया जाये तो और भी आश्चर्य होता है। बड़े से बड़ा विज्ञान-वेत्ता यह नहीं जानता कि एक मिनट के पश्चात् क्या होगा। या उसी समय उसकी पीठ के पीछे क्या हो रहा है। बड़े से बड़ा वैद्य जो चिकित्सालय में सहस्रों रोगियों के महारोगों को अच्छा करने का दम भरता है यह नहीं जानता कि उसी के हृदय की गति किस प्रकार चल रही है या उसी के फेफड़ों में कौन-सा रोग शनैः शनैः प्रवेश कर रहा है।

जैसा मनुष्य का ज्ञान है वैसा ही इसका पराक्रम है। इसमें सन्देह नहीं कि मनुष्य ने पृथ्वी के धरातल को बदल दिया परन्तु किसके बल से? केवल यही न कि संसार की वस्तुओं को देखा और उनकी नकल की। नकल भी सब नहीं कर सकते। बड़े-बड़े बुद्धिमान् ही कर सकते हैं। फिर भी वे बड़े प्रशंसनीय समझे जाते हैं। मनुष्य ने कौन सी ऐसी वस्तु बना दी या कौन सा ऐसा काम कर दिया जो सृष्टि के किसी ने किसी काम की नकल न था? यदि मनुष्य ने अच्छे-अच्छे महल बनाये तो उसको शिक्षा देने के लिये बया नामी छोटा-सा जानवर उपस्थित था। पर भिड़ के छते को ही लीजिये या शहद की मक्खी के छत्ते पर दृष्टिपात कीजिये और मनुष्य को अपने पराक्रम पर लज्जित ही होना पड़ेगा। यदि

**शेष पृष्ठ 4 पर...**

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

# सोचते हैं करते नहीं

(हिन्दी दिवस पर विशेष) **कैलाश चन्द्र शास्त्री**

देश को स्वतन्त्र हुए 67 वर्ष हो गये, फिर भी हम जहाँ खड़े थे वहीं खड़े हैं। एक युग बीत गया लेकिन मानसिक दासता बनी हुई है। राष्ट्र भाषा, संस्कृति, सभ्यता, रहन-सहन का पाश्चात्य अन्धानुकरण देश को खड्डे में डाल देगा। भूमिका की आवश्यकता नहीं है। सभी जानते हैं 14 सितम्बर हिन्दी दिवस है। तोते की तरह रटकर बड़े ही गौरव से कहते हैं हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, हिन्दी माथे की बिन्दी है इत्यादि...। किसी आदर्श वाक्य को बोलना अलग है और उसे व्यवहार में लाना और बात है। आदर्शों की रक्षा व्यवहार से होती है न कि भाषणों से, घोषणाओं से, लेखों से एवं कानून बना देने से।

यदि भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी है तो इसी भाषा में देश के न्याय, कानून, राजकाज आदि होना चाहिए। हमारी शिक्षा मातृभाषा में होनी चाहिए। न्यायालय की भाषा अंग्रेजी न होकर हिन्दी होनी चाहिए। मुट्ठी भर आदमी जिस भाषा को बोलते और समझते हैं उस अंग्रेजी के द्वारा सारी प्रजा का कार्य नहीं किया जा सकता। प्रजा की सम्मति उसी भाषा में प्रकट होनी चाहिए, जिसे वह समझती है। बड़े गर्व से कहते हैं गणतन्त्र है प्रजातन्त्र है। प्रजातन्त्र है तो प्रजा का शासन उसी भाषा में होना चाहिए, जिसको वह बोलती हो। सैम पित्रोदा ने तो पहली कक्षा से अंग्रेजी भाषा को अनिवार्य रूप से पढ़ाने के लिए सिफारिश कर दी और सरकार ने मान ली। संघलोक सेवा आयोग जैसी संस्था की सर्वोच्च प्रशासनिक सेवा परीक्षा में अंग्रेजी को अनिवार्य करने का षडयन्त्र किया जा रहा है। विश्व के सभी विकसित देशों चीन, जापान, फ्रान्स, जर्मनी, रूस आदि देशों में सम्पूर्ण शिक्षा अपनी मातृभाषा में ही दी जाती है। पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने कहा है- 'मैं आज वैज्ञानिक बन सका हूँ, क्योंकि मैं अपनी मातृभाषा में पढ़ा हूँ। ध्यान रखना- मा, मातृभूमि और मातृभाषा का कोई विकल्प नहीं होता।

यूनेस्को की 1953 की रिपोर्ट के अनुसार विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़ने वाला तथा वार्ता करने वाला व्यक्ति अपना व्यक्तित्व खोकर दूसरों का नकलची बन जाता है। टैगोर, तिलक, महामना मालवीय, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, बिनोवाभावे, डॉ. कलाम, प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु, सुपर कम्प्यूटर के जनक डॉ. विजय भटकर, मेघनाद साहा, सरदार पटेल जैसे स्वनाम धन्य महापुरुषों की शिक्षा मातृभाषा में हुई थी। संसद में बैठे हुए अंग्रेजों के मानस पुत्र जिनको देश का कर्णधार कहा जाता है वस्तुतः वे सब देश का बंटाधार करने में लगे हैं। न केवल वे नेता दोषी हैं अपितु वे सभी लोग देश दोही हैं जिन्होंने अपने आत्मीय सम्बन्धों एवं दनिक व्यवहार को अंग्रेजी में परिवर्तित कर दिया है।

आज जरुरत है कि कम से कम आप मम्मी, डैडी, अंकल, आंटी, प्रिंसिपल, मास्टर, टीचर, हेलो, हैप्पी बर्थ डे टू यू, गुड मोर्निंग, ब्रेक फास्ट, लंच, डिनर जैसे शब्दों को तो अपने घरों से निकाल फेंक सकते हैं। अंग्रेजी बोलने से गौरव नहीं बढ़ता अपितु बौद्धिक दरिद्रता झलकती है। अंग्रेजी बिना सिर पैर की दरिद्र भाषा है। जिसका कोई अपना एक स्थायी जीवन दर्शन एवं मूल्य नहीं है उसी भाषा से शिक्षा देना नैतिक पतन को निमन्त्रण देना है। क्यों कि बिना मूल्यों की शिक्षा सुगन्ध हीन फूल जैसी है।

**कम से कम आप यह तो कर सकते हैं -**

1. हस्ताक्षर अपनी भाषा (हिन्दी आदि) में करें न कि अंग्रेजी में। हस्ताक्षर व्यक्तित्व एवं मानसिकता की पहचान है।
2. कार्यालय, दुकान में नाम पट्टिका, नाम पट्ट (बोर्ड) रसीद, रबड़ की मोहर आदि अपनी भाषा में ही बनवायें।
3. विवाह संस्कार आदि के निमन्त्रण पत्र संस्कृत, हिन्दी एवं अपनी मातृभाषा में छापें एंव छपवायें।
4. बच्चों को आवेदन पत्र मातृभाषा में या हिन्दी में लिखवायें एवं स्वयं भी लिखें।
5. बैंक, विद्यालय, कार्यालय आदि के काम हिन्दी में करें एवं करवायें।
6. लोगों को जागरुक करें एवं क्रान्ति लायें। समाचार पत्र, इन्टरनेट, फेसबुक के माध्यम से हिन्दी को बढ़ावा दें।
7. अपना मतदान उस को करें जो अपनी भाषा या हिन्दी का समर्थक हो, न कि अंग्रेजी का।

आज जरुरत है सोया पड़ा स्वाभिमान को जगाने की। सुधार तो पहले अपना करना चाहिए बाद में दूसरों का। सोचते तो सभी हैं लेकिन करते नहीं। आशा है भारत देश के नागरिक अपने गौरव को जीवित एवं जागृत रखेंगे।

## श्रद्धांजलि

आर्य समाज राजेन्द्र नगर के वरिष्ठ सभासद् एवं उपप्रधान श्री सुरेन्द्र नाथ सहगल जी का स्थानीय कपूर अस्पताल में 22.8.13 को हृदयाघात के कारण आकस्मिक निधन हो गया। स्व. सुरेन्द्र जी समाज के संस्थापक सदस्य तथा सुप्रसिद्ध आर्य नेता स्व. द्वारकानाथ जी सहगल एवं स्व. माता वैष्णो देवी जी के ज्येष्ठ पुत्र थे। वैदिक धर्म में सहज अभिरुचि उन्हें अपने माता-पिता से विरासत में मिली थी। महर्षि दयानन्द के प्रति उनके मन में अखण्ड श्रद्धा थी। आर्य समाज द्वारा समायोजित सभी धार्मिक-सामाजिक कार्यक्रमों तथा साप्ताहिक एवं दैनिक यज्ञ-सत्संग में अवश्य उपस्थित होते थे। ऋषि भक्ति के भजन बड़ी तन्मयता से सुनाते थे। भक्ति-भाव की ऐसी भव्य धारा प्रवाहित होती थी कि श्रोताओं के हृदय आनन्द रस पूरित हो जाते थे। वैदिक सिद्धान्तों की उन्हें अच्छी समझ थी। सारा परिवार आर्य समाज की सेवा में समर्पित है। उनके अनुज श्री अशोक सहगल जी समाज के प्रधान के रूप में सक्रियता से समाज के प्रति अपने उत्तर दायित्वों को निर्वहन कर रहे हैं। दिनांक 24 अगस्त 2013 को उनकी श्रद्धांजलि सभा में बड़ी संख्या में आर्यजन उपस्थित थे। इस अवसर पर विद्वान् वक्ताओं ने उनकी पुण्यात्मा की शान्ति व सद्गति के लिए परमात्मा से कामना करते हुए परिवार को इस दुःख को सहन करने के लिए शक्ति व क्षमता देने की प्रार्थना की। परिवार ने स्व. सुरेन्द्र जी की स्मृति में 1,50,000 रुपये विभिन्न आर्य संस्थाओं को दान दिया।

-डॉ. भारद्वाज पाण्डेय

www.thearyasamaj.org



शेष पृष्ठ 2 का...

कोई मनुष्य कागज या मिट्टी का ऐसा काम बनाता है जिसको देख कर लोगों को धोखा हो जाय तो उसकी बड़ी प्रशंसा होती है, उसे पारितोषिक दिये जाते हैं, उसकी योग्यता के गीत गाये जाते हैं। यह केवल इसलिये न कि उसने सृष्टि की एक वस्तु अर्थात् आम की केवल एक बात अर्थात् आकृति में नकल उतारी है। गन्ध, स्वाद तथा अन्य गुणों की तो बात ही अलग रही। संसार में बुद्धिमान लोग नित्यप्रति आविष्कार करते रहते हैं और उनके लिये उनकी प्रशंसा भी होती है परन्तु सोचो तो सही कि आविष्कार क्या वस्तु है? यही न कि अमुक मनुष्य ने सृष्टि की अमुक वस्तु के समान या एक दो अंश में समान वस्तु तैयार कर ली। हमारा यह तात्पर्य नहीं है कि मनुष्य को इन पर अभिमान नहीं करना चाहिये। वस्तुतः वैज्ञानिक अथवा आविष्कारक सभी पुरुष अन्य पुरुषों के पूजनीय हैं क्योंकि वे मनुष्य जाति की सुखवृद्धि और ज्ञान वृद्धि का कारण होते हैं परन्तु उनका इतना अभिमान करना ही उनकी अल्पशक्ति को प्रकट करता है। कल्पना कीजिये कि एक छोटा बच्चा शाला में पढ़ने जाता है। गुरूजी उसकी पट्टी पर कुछ लिख देते हैं। वह उन अक्षरों को देखकर उन्हीं के समान बनाने का यत्न करता है, जो अक्षर वह बनाता है वह गुरु के अक्षरों से अत्यन्त निचली श्रेणी के होते हैं परन्तु उसको प्रत्येक अक्षर पर अभिमान होता है क्योंकि वह समझता है कि मैंने गुरुजी के अक्षरों के तुल्य अक्षर बनाये हैं। यदि वह गुरूजी के अक्षरों से उत्तम अक्षर भी बना सकता तो भी वह अपने को गुरूजी से बड़ा मानने का अधिकारी नहीं था क्योंकि उसने केवल गुरूजी के अनुकरण से ही ऐसा किया था। उसका गुरूजी के अक्षरों के तुल्य अक्षर बनाना ही पर्य्याप्त अभिमान की बात थी। इसी प्रकार यद्यपि संसार के बड़े-बड़े आविष्कार करने वाले अनेक अशों में पूज्य और प्रशंसनीय हैं तथापि उनको यह अभिमान करने का अधिकार नहीं कि वे बहुत या सर्वज्ञ हो गये और न कोई आविष्कारक या वैज्ञानिक ऐसा निर्बुद्धि है कि इस बात की प्रतिज्ञा करता हो।

मनुष्य के इतिहास पर दृष्टिपात करने से एक विचित्र बात यह ज्ञात होती है कि वह सृष्टि की शक्तियों को वश में करने का सदैव प्रयत्न करता रहा और सदैव ये शक्तियाँ परास्त करती रहीं। संसार एक अखाड़ा है जहाँ सृष्टि की अन्यान्य शक्तियाँ मनुष्य को कुश्ती सिखाया करती हैं। बड़ा पहलवान छोटे पहलवानों को दाँव पेच सिखाता है। कभी-कभी गिर भी पड़ता है। कभी-कभी उनका दिल बढ़ाने के लिए अपनी शक्ति के एक अंश से ही काम लेता है। यदि ऐसा न करे तो उनके शिष्य पहलवानी ही न सीख सकें। परन्तु यदि कोई शिष्य पहलवान अपने को गुरूजी से बड़ा समझने लगता है तो झट पछाड़ दिया जाता है। यही दशा मनुष्य की है। इससे सर्वदा सृष्टि की शक्तियों और पराक्रमों का अनुकरण किया और उन पर विजय भी प्राप्त करनी चाही। सृष्टि ने उसको ढाढंस दिया और उसकी हिम्मत बढ़ाई। उसने चाहा कि जिधर एक नदी बह रही है उसको काटकर उसका बहाव दूसरी ओर कर दूँ। नदी ने कहा "मैं तैयार हूँ। मूझे जिधर चाहो ले चलो।" उसने पहाड़ से कहा "तू मेरे मार्ग में खड़ा है। मैं तुझे काट डालूंगा।" पहाड़ ने कहा, "कुछ संकोच नहीं। मुझे काट और अपना काम चला"। वायु से कहा "मैं तुझसे अपनी कलों का काम लूँगा" वायु ने उत्तर दिया "मैं तेरे साथ हूँ।" परन्तु जब मनुष्य के हृदय में यह अभिमान हुआ कि अब समस्त शक्तियाँ मेरी दास हो गईं तो उन शक्तियों ने ऐसा तमाचा मुँह पर मारा कि इसकी आँखें निकल पड़ीं।

बड़े-बड़े बुद्धिमान वैद्यों ने चाहा कि शारीरिक अवयवों की परीक्षा करके इस प्रकार की बनस्पतियों या औषधियों की खोज कर लें जिनसे मनुष्य के रोग दूर हो सकें और वह चिरायु हो सके। उन्होंने बहुत-सी दशाओं में रोगों को अच्छा भी किया। परन्तु वे किसी को अमर बनाने में सशक्त न हो सके। जब मृत्यु आई अच्छे से अच्छे डाक्टर और वैद्य मुँह बाये रह गये। और बड़े-बड़े धनपतियों और सम्पत्तिशालियों का धन उनको एक मिनिट के लिये जीवित न रख सका। यह क्या बात थी? वही तमाचा जिसका हम ऊमर वर्णन कर चूके हैं। एक पत्र में एक बार एक प्रश्न था कि

When does the Lord smile?

"अर्थात् ईश्वर कब हँसता है?" और उसका उत्तर यह था कि जब कोई वैद्य किसी रोगी को देखने आता है और कहता है, 'घबराओ मत' मैं तुम्हें अच्छा कर दूँगा' तो ईश्वर हँसता है'। वस्तुतः है भी हँसी की सी बात। जिस वैद्य को अपने रोग निवारण की भी शक्ति नहीं है वह दूसरे के रोग की निवृत्ति की निश्चित प्रतिज्ञा कैसे कर सकता है? वह यह तो कह सकता है कि "मैं यथाशक्ति तुम्हारे रोग निवारण का यत्न करूँगा"। परन्तु यत्न से अधिक मनुष्य के अधिकार में है भी क्या जिसका वह दावा करे? बहुत से डाक्टरों को हमने देखा है कि वह रोगी के मर जाने पर कोई न कोई बहाना ढूढते हैं जिससे उनकी डींग वैसी ही बनी रहे। परन्तु यह उनकी विडम्बना ही होती है। वह कभी-कभी अपने निज पुत्र को भी नहीं बचा सकते। जब हम सोचते हैं कि संसार के चिकित्सकों ने लाखों वर्ष पूर्व से लेकर आज तक मृत्यु से लड़ाई करने की कितनी कोशिश की है और वह अपने इस उद्देश्य की पूर्ति में कहाँ तक विफल हुये हैं तो हम को मनुष्य की अल्पता में कुछ भी संशय नहीं रह आता।

### VALUABLE THOUGHTS

1. An ounce of Practice is better than tones of tall talk. "Vivekanand"
2. A lean compromise is better than a fat "law - suit".
3. An optimist always laughs to forget, A pessimist forgets to laugh.
4. A lustful man becomes shameless, A greedy man loses courage, An angry man loses his health. Therefore, destroy lust, greed and anger "Vivekanand"
5. Being good to others is best way to be good to yourself.
6. Love is life, hatred is death.
7. He, who knows how to obey, knows how to command.

### RULES FOR THE HAPPINESS

1. Happy moments - Praise God.
2. Difficult moments - Seek God.
3. Quit moments - worship God.
4. Painful moments - Trust God
5. Every moments - Thank God

And:

1. Never hate.
2. Don't worry.
3. Live simple.
4. Expect little
5. Give a lot.
6. Always smile.
7. Be slow in choosing friends because broken relations and spoken words never come back

Compiled by - Sudarshan Rai

www.thearyasamaj.org



# लोभ और वैराग्य

एक साधु अपने आसन पर बैठा है। कुटी बहुत अच्छी बनी है। लोग-बाग बैठे हुए उसकी करामात की प्रशंसा कर रहे हैं। जो कोई कुछ धन भेंट करता है, वह कह देता है- 'बच्चा, साधुओं को धन से क्या प्रयोजन ! दो रोटियाँ चाहिए, सो ईश्वर भेज ही देता है।'

**यात्री** (हाथ जोड़े) - बाबा जी! मेरे ऊपर थोड़ी-सी दया कीजिये । मैं परदेशी हूँ। यहाँ कोई सहायक नहीं है। आपकी शरण हूँ।

**साधु** - बाबा ! फकीर के पास क्या रखा है? जो कुछ है, वह देने को तैयार हूँ।

**यात्री** - बाबा जी ! अकेले में सुन लीजिये तो कहूँ।

**साधु** - नहीं बच्चा, सबके सामने कहो।

**यात्री** - बाबा जी! यह मेरे पास एक हजार रुपया है। रात को मुझे चोर घेरे रहते हैं और सोने नहीं देते। आप आज्ञा दें तो मैं आपकी कुटी में रख दूँ।

**साधु** - (चित्त में प्रसन्न होकर) -नहीं बच्चा, नहीं। साधु ऐसा लोभ नहीं करता। चेले! इसको निकाल दो। (और दूसरे चेले से कान में) देखो, इसको अकेले में लाओ।

पहले चेले ने तो उसको धक्के मारकर घर से निकाल दिया, और दूसरा चेला तूम्बा व झोली उठा उसके पीछे-पीछे चल दिया। यात्री बेचारा उदास हो, दूर जाकर एक वृक्ष के नीचे निराश बैठ गया।

**चेला** - कहो बाबा, कैसे उदास बैठे हो? क्या किसी ने सताया है?

**यात्री** - नहीं भाई, सताया तो किसी ने नहीं। हमने साधु महाराज से कहा था कि हमारे कुछ रुपये रख लें, किन्तु उन्होंने तो हमें धक्के देकर निकलवा दिया।

**चेला**- अरे भाई, तुम तो बावले हो। तुमने बहुत-से आदमियों के सामने कहा होगा। यदि वे सबके सामने रखवा लेते तो बोलो, उनके घर में चोर कैसे छोड़ते? तुम संध्या को हमारे साथ चलना। हम तुम्हारे रुपये कहीं जमीन में गड़वा देंगे। हमारे गुरु जी तो रख नहीं सकते, हाँ, जब तुम लौटकर आना तो वहीं से खोद लेना। मैं भीख माँगने चला हूँ। यदि अवसर मिला तो दोपहर में ही ले चलूँगा।

**चेला** दो-एक घर घूमकर वापस आया और उधर फकीर ने सब लोगों को अलग कर दिया। मुसाफिर को साथ लेकर वह चेला साधु जी की कुटिया पर पहुँचा।

**साधु**- ऐ चेला ! इसे क्यों ले आया? यह रुपया लिये फिरता है, हम साधुओं का धन से क्या सम्बन्ध?

**चेला** - गुरु जी ! यह परदेशी है, बेचारा किसी को जानता नहीं, कहाँ जावे? आप तो सबका भला करते हैं। इसका रुपया भी कहीं रखवा दीजिये।

**साधु**- ओह, तो तुमने इसे स्वीकार कर लिया है। खैर, यात्री भाई, अब मैं विवश हूँ। जब उसने तुमको वचन दे दिया है तो अपना धन तुम कोने में दबा दो। जब आओगे तो वहीं से ले लेना।

मुसाफिर कोने में रुपया गाड़कर चल दिया और कह गया कि दो माह के बाद ले जाऊँगा। यात्री के जाते ही साधु ने लालच में अपनी एक आँख फोड़ डाली और घर का दरवाजा बदल दिया जिससे कि यात्री घर पहचान न पावे।

कुछ दिनों बाद यात्री आया और घर को खोजने लगा। न तो उसे वह कुटी दिखाई दी और न ही वह साधु दिखाई दिया। केवल एक काना साधु मिला जिसे हैरान हो उसने पूछा-

**यात्री** - बाबा जी! यहाँ पर एक साधु रहते थे। अब न तो उनका पता है न उनकी कुटी का। कृपया बतला दीजिये कि वह कहाँ हैं?

**साधु**- अरे बच्चा! वह यहाँ कहाँ। वह तो चले गये।

**यात्री** (सहमकर) - हाय! अब क्या होगा?

**साधु** - बच्चा ! बतला तो क्या हुआ, क्या बात है?

**यात्री** - बाबा जी! मैं उनके पास एक हजार रुपया रख गया था। अब तो मैं लुट गया! यह तो मेरे सारे जीवन की कमाई थी। मैं तो किसी काम का न रहा! हाय, मैं तो लुट गया!

कहीं शोर न मच जाय, यह सोचते ही चेलों ने उसे धक्के मारकर बाहर निकाल दिया। वह बेचारा बस्ती में रोता-फिरता रहा। एक भली स्त्री ने उसे बुलाया और बिठलाकर उससे हाल पूछा-

**स्त्री** - अरे, तू इस भाँति क्यों रोता-फिरता है?

**यात्री** - बहन, क्या कहूँ! मैं तो लुट गया!

**स्त्री**- भाई! कुछ कहो तो क्या बात है? यदि मैं कुछ सहायता कर सकूँगी तो अवश्य करूँगी।

**यात्री** - बहन! दो माह बीते जब कि यहाँ पर एक साधु रहते थे। मैं उनके घर 1000 रुपये गाड़ गया था। उस समय घर का दरवाजा पूरब की ओर था। किन्तु अब तो मकान का दरवाजा भी पश्चिम की ओर है और साधु भी वहाँ नहीं है। एक काना फकीर बैठा है। मैंने उससे पूछा तो मुझे धक्के मारकर निकलवा दिया।

**स्त्री** - बस, यही बात है? देखों, मैं वहाँ जाकर अपने गहने साधु के सामने फैलाती हूँ। जिस समय मैं अपने आभूषणादि फैला चुकूँ तो तुम चले आना और अपना रुपया माँगना, वह फौरन तुम्हें दे देगा।

फिर उस स्त्री ने बाँदी से कहा कि 'जल्दी से पालकी लाओ और जिस समय इस मुसाफिर का रुपया मिल जाय, तुम फौरन पहुँचकर मुझसे कहना कि मियाँ तो आ गए!'

फिर वह स्त्री पालकी में बैठ चार-पाँच हजार रुपयों के आभूषणादि लेकर फकीर के पास पहुँची। फकीर ने सब मर्दों को अलग कर दिया। फिर पालकी उतारी गई।

**स्त्री** - बाबा जी! मियाँ का पुत्र मेरे को बुलाने आया है। मेरा विचार कल उनके पास जाने का है। आपको मालूम है कि आजकल चोरों का बड़ा जोर है और मेरा आपके सिवा और किसी पर विश्वास नहीं है। कृपया आप मेरे आभूषणादि रख लें, आपकी बड़ी कृपा होगी।

इसी समय वह यात्री भी रोता हुआ वहाँ पहुँच गया।

**साधु** - (यात्री की ओर देखकर) अरे बाबा! तू कहाँ था? तू अपने रुपये क्यों नहीं ले गया? देख, इसी कोने में से निकाल ले।

**बाँदी** - (उसी समय आकर साधु को प्रणाम कर)- बीबी! मियाँ साहब तो खुद ही आ गए। आपको याद कर रहे हैं, जल्दी चलिये!

यह सुनकर स्त्री ने जल्दी से जेवर एकत्र किये और खुशी-खुशी उठी। साधु बाबा पहले तो मुँह देखता रहा, फिर हँसने लगा। इस पर सब हँसने लगे।

**स्त्री** - यात्री, तू क्यों हँस रहा है?

**यात्री** - बीबी, तुम्हारी बदौलत मेरे 1000 रुपये मिल गए, मैं तो इसलिए हँसता हूँ।

**स्त्री** - बाँदी, तू क्यों हँसती है?

**बाँदी**- बीबी, तेरे मियाँ आ गए हैं, सो खुशी के मारे हँसती हूँ।

**स्त्री** - साधु जी! क्यों हँसते हो?

**साधु** - बीबी! मैंने एक नई बात सीखी। आँख भी खोई, घर भी तोड़ा और रुपया भी हाथ न आया, इसी बात पर मैं हँस रहा हूँ। शोक! मैं अपने गुरु की प्रतिज्ञा को भूल गया कि अधिक लालच में आदमी थोड़े को भी खो बैठता है।

**शिक्षा** - आधी छोड़ सारी को धावे, आधी मिले न सारी पावै।

**(कथा पच्चीसी से उद्धृत)**

www.thearyasamaj.org



– गतांक से आगे

# THE VEDIC LIGHT

## MORALITY

(Swami Vidyanand Sarswati ji)

Alfred Wallace, co- discover of the Theory of Evolution writes in his 'Social Environment and moral Progress' – "In the earliest record which have come down to us from the past, we find ample indications that the accepted standard of morality, and the conduct resulting from these were in no way inferior to those which prevail today, though in some aspects they did differ from ours. The wonderful collection of hymns, known as Veda, is a vast system of religious teachings as pure and lofty as those of the finest portions of the Hebrew scripture ... We must admit that the mind which conceived and expressed in appropriate language such ideas as are everywhere present in these Vedic hymns, are in no way inferior to those of the best of our religious teacher and poets – to our Shakespeare, Milton and Tennyson." Where is the scope for a social evolution, if the teachings of the Vedas which are decidedly the oldest books in the library of mankind are found to be as lofty and pure.

It is evident then that the higher up towards the source of religion we push enquiries, the purer, and the simpler do we come to find the Vedic conception of God; and as we come down the stream of time, the more corrupt and complex do we find it. The inevitable conclusion, therefore, is that the development of religious thought in India has been uniformly downward, and not upward – that of deterioration, and not of evolution. We are thus justified in concluding that these higher and purer conceptions of the Vedic Aryans were the result of a primitive divine Revelation.

### *WHY VEDA ALONE?*

VEDA means wit, wisdom and knowledge and truly Veda is a Samhita of wit, wisdom and knowledge. It is a multi – book of wisdom and knowledge, comprising the Book of Nature, the Book of Knowledge, the Book of Religion and the Book of Morals. Veda is the only book on earth which deals with 'Para' (esoteric or spiritual) as well as 'Apara' (exoteric or worldly) Sciences.

But there are many other holy books which claim Divine origin for themselves. How should we know which of them is really divinely revealed? True, but it is not difficult to determine it after we apply the requisite tests.

1. The Supreme knowledge emanates from the same Lord as is the creator of the universe and to whom we give our corporeal existence in this life and the lives to come. Therefore, there should be no contradiction between what we read in the texts and what we observe in the universe. Of the 'Padartha' **(पदार्थ)** the 'Padas' **(पद)** are in the Veda and the 'Artha' **(अर्थ)** is in the universe. For example – the word (cow) is in the Ved and its arth, i.e., the particular animal known by that name is in the world. Commenting on it, James Hasting, in his Encyclopedia of Religion and Ethics says – "Dayananda tried to make the Book of God resemble the Book of Nature."

2. God is holy, Formless, all pervading, all knowing, all powerful, just, benevolent and never subject to birth and death. The book, that describes its author exactly as he is, shall be accepted as divinely revealed.

3. The book, inspired by God, should not be found to containst the laws of nature, the evidence of the senses and other logical concerns.

4. God is infallible, while to err is human. Therefore the teaching in Gods book should be equally infallible and never subject to amendment.

5. A great Philosopher of England, W.D. Brown, writes in the 'Superiority of the Vedic Religion' – "Vedic Religion is thoroughly scientific where science and religions meet hand in hand. Here theology is based on science and philosophy."

6. Louis Jacolliot, after making a comparative study of the various theories of creation of the world in different religions observed:

"Astonishing fact! The Hindu Revelation, Veda is of all revelations, the only one whose ideas are in perfect harmony with modern science." (The Bible in India, *Vol. II*, chap- I)

This is a because of harmony between religion and science that there have been not prosecutions or persecutions of scientists we read in Doctor Draper's 'History of the Conflict between Religion and science."

7. To err is human, the question of any error in t he case of the Supreme Lord does not arise. Hence, the Divine Revelation must essentially be without any error. In the Bible (genesis) we read – "God made man in his image." And then we read-

"And it repented the Lords that he made man on the earth and it grieved him at his heart. And the lord said, "I will destroy man, whom, I have created, from the face of the earth. For it repented me that I have made him."

The man, whom god made in his own image. Must have been very much like him in form and in attribute. The Bible does not tell us what was so wrong with him that the father vowed to destroy his own creation from the face of mother earth.

8. The revelation must be perfect in all respects, so as to meet all the demands of man. The great scholiast of Maharashtra B.B Panagi, writing about the Vedas in his 'Vedic India – Mother of Parliaments' says –

www.thearyasamaj.org



"The Vedas are the fountainhead of knowledge, the prime source of inspiration, nay, the ground depository of Divine wisdom and external truths."

In yet another important book of his 'Vedic father of geology' he writes-

"I take this opportunity to remind the reader without any fear of contradiction, the Vedas contain many things not yet known to anybody, as they form a mine of inexhaustible literary wealth that has still remained unexplored."

Dr. V.G. Raileigh, the renowned Zoologist of Bombay University writes in one of his much publicised work "The Vedic Gods' –

"Our present anatomical knowledge of the nervous system tallies so accurately with the literal description of the body given in the Rigveda that a question arises in the mind whether the Vedas are religious books, or whether they are books on anatomy and physiology of the nerves system without the thorough knowledge of which psychological deductions and philosophical speculations cannot be correctly made."

Panyam Narayan Gaur, speaking of the elements of physics and chemistry in the

Vedas, thus elaborated the title of his book 'Introduction to the message of 20th century – 'Containing a new method for the interpretation of the Vedas and experimental data proving that the

**Vedas are treatises on the exact science**

9. According to Aurobindo (Arvind) "Veda contains truths of science which the modern world does not at all possess and in that case, Dayanand has rather understated than overstated the depth and range of Vedic wisdom."

10. If there is God who has created heaven and earth and endowed man with all the knowledge he needs, it will be unjust on His part to deprive millions of his sons (born before Divine Revelation) of his knowledge. Reason and Comparative study of religions requires God to reveal his knowledge from the first appearance of man on Earth.

11. All knowledge should be delivered once for all, and not in instilments. Spreading over millions of years. Since god cannot err, the question of amendments, addition and subtractions in his knowledge does not arise

12. There should he no historical geographical references in a book claiming to have been composed or delivered in the beginning of creation – no mention of territorial divisions or proper names of river, mountains, things or persons or specific events.

The conflict between the Araya and Dasyu was in no way a war between two races or the like. It was, is and shall continue to be a conflict between the law – abiders and the law - breakers. The same is true about the Asuras, Panies etc. To see an account of racial conflict in the lives of the Vedic texts, or to trace the history of our relationships to the days of the revelation would be our utter ignorance and scholastic injustice.

**The Panies** – The dasyus who with hold the water or steal the cows are called panies. Dasyu or panies are not historical people. In the Veda they do not represent a race. They are one of us, and are present in all of us, and against them we have to wage a war, since they steal away our cows, horse and other riches which have to be ravished from them by violence. The Arya is a personification of virtue and divine thoughts. He has to be constantly at guard against dasyus, a synonym of evil thoughts, wickedness, neiscience and darkness. It is often that the Dasyus,the devils take possession of us, they steal our virtues, they cover our wisdom with ill thoughts and thus they steal away our cows, horses and other riches. In that case we invoke our Gods and with the help of all the gods Indra (the self) has to discover and recover our lost wealth. The Dasyu, who steal or withhold our divine wealth, are called Panies, a word originally meaning dealers or trafickers. They are misers to the extreme. Normally the term pani is not derogatory. But when the same person becomes a hoarderer a black marketer, then the term sinks of an evil connotation. Similar to the word Pani, in English language, the word Jew has double connotation –

(i) One who professes Judaism (Good sense) and (ii) a trader who drives hard bargains (derogatory).

(ii) Names of certain historical persons and geographical places found here and there in the Vedas may create a false impression about the existence of the elements of historicity in the Vedas. But when we dig deeper and examine them in the context in which they occur and the texts which precede or follow them, the so called element of historicity vanishes. In order to substantiate our point of view a few example are given here:

1. Mention is made in Yajurveda (23.18) about Ambika Amba and Ambalika. It is contended that these names refer to the three girls whom Bhishma had abducted to marry them to his brothers. It may, however, be noted that in the Yajurveda they are stated to be Kampetavasinees (residents of Kampevel), whereas in the Mahabharata they are known as the daughter of the king of Kashi. As a matter of fact, as mentioned elsewhere in the Yajurveda (3.7 and 12.76) these refer to the names of particular medicines.

2. In Atharvaveda (13.3.26) we read - **कृष्णायःपुत्रोऽर्जुनः**

Arjuna, the son of Draupadi. But in the Mahabharata Arjuna is said to be husband, and not son of Draupadi. The correct meaning is known when, as required, the Mantra is interpreted etymologically and in accordance with the Shatpatha Brahmana. Krishna here means night and the day or sun, born, as if of night, is called Arjuna.

**कृष्णाकावैरात्रिः आदित्यिस्तस्यावत्सो अर्जुनः**

The same is true of the words suggestive of geographical names. We come across the following mantra in the Yajurveda –

**पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः**

The words **(पञ्चनद्यः)** are said to refer to the river of Punjab i.e. the land of five rivers. But everybody knows that the said five rivers do not flow in to the Saraswati which itself remains unidentified. They merge with the Indus and through it flow into the Arabian Sea.

www.thearyasamaj.org

Date of Posting 12 & 13, S.R.T. Nagar, ND-55
Date of Publication 8-9-2013

R.N. DEL BIL/2007/22120
DL (C)-14/1181/2011-2013

ओ३म्

# श्रावणी पर्व सोत्साह सम्पन्न

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली के भव्य प्रांगण में 24 अगस्त से 28 अगस्त तक श्रावणी पर्व उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रातः कालीन सत्र में अथर्ववेदीय वृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया तथा सायंकालीन सत्र में आचार्य कैलाश शास्त्री जी के वेद मन्त्रों पर आधारित प्रवचन तथा आचार्य गौरव शास्त्री एवं आचार्य अंकित शास्त्री जी के मधुर भजन हुए। श्रद्धालु आर्य जनता ने इन कार्यक्रमों का आनन्द उठाया। 24 अगस्त जन्माष्टमी के दिन यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् विशेष कार्यक्रम के अन्तर्गत "आर्य संस्कृति के उन्नायक योगेश्वर श्री कृष्ण एवं महर्षि दयानन्द" विषय पर वैदिक विद्वानों के सारगर्भित प्रवचन हुए, जिनमें प्रमुख थे- श्री स्वामी विश्वानन्द जी (मथुरा), डॉ. महेश जी विद्यालंकार, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी, आचार्य कैलाश शास्त्री जी आदि। कार्यक्रम की अध्यक्षता धर्माचार्य डॉ. भारद्वाज पाण्डेय ने की। इसके बाद विभिन्न आर्य संस्थाओं एवं गुरुकुलों से आये हुए 103 विद्यार्थियों में 1,25,400 रुपयों का वितरण किया गया। इस अवसर पर कामरोस संघ के राजदूत श्री के.एल. गंजू साहब ने आर्य समाज द्वारा संस्कृति रक्षा में तत्पर गुरुकुलों के छात्रों के लिए चलाये जा रहे इस प्रकल्प की सराहना की।

समारोह के समापन से पूर्व समाज के यशस्वी प्रधान श्री अशोक सहगल जी एवं कर्मठ मन्त्री श्री सतीश मैहता जी ने सभी विद्वानों, कार्यकर्ताओं एवं दानी महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद किया। श्री सुरेश चुघ जी ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया। शान्तिपाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का भव्य समापन हुआ।

Printed and published by Sh. N.M. Walecha Secretary on behalf of Arya Samaj, Rajinder Nagar and printed at Gurmat Printing Press, 1337, Sangatrashan, Pahar Ganj, New Delhi-55 Ph. : 23561625 and published at Arya Samaj, Rajinder Nagar, New Delhi-110060. *Editor :* Dr. Bhardwaj Pandey